# इकाई 12 पुराण और महापुराण में अन्तर तथा विविध पुराण

**इकाई की रूपरेखा**


12.0 उद्देश्य

12.1 प्रस्तावना

12.2 पुराण और महापुराण के बीच अंतर

12.2.1 महापुराण

12.3 विविध पुराण

12.3.1 उपपुराणों की संख्या एवं नाम

12.3.2 औपपुराण

12.3.3 अन्य औपपुराण

12.4 अन्य प्रमुख पुराण

12.5 सारांश

12.6 अभ्यास


## 12.0 उद्देश्य

इस इकाई में पुराण और महापुराण में अन्तर तथा विविध पुराण के विषय में अध्ययन करेंगे।

- महापुराण के बारे में जानेंगे;
- पुराण और महापुराण के बीच अंतर को समझेंगे;
- उपपुराण की संख्या को जानेंगे;
- उपपुराण के विषय में समझेंगे;
- औपपुराण तथा अन्य पुराण के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे; और
- महापुराण शब्द से क्या अभिप्राय है यह जान सकेंगे।

## 12.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में हम पुराणों के साथ–साथ महापुराण के बारे में भी जानेंगे। पुराण एवं महापुराण के बीच क्या संबंध अथवा अंतर होता है इसको भी समझेंगे। इन्हीं के साथ साथ पुराण और कितने प्रकार के होते हैं जैसे उपपुराण, औपपुराण तथा विविध एवं अन्य पुराणों के बारे में विस्तार से जान सकेंगे। इन सभी पुराणों के अंदर क्या क्या विशेष विषय सामग्री है, इसका अवलोकन कर सकेंगे तथा इन सभी पुराणों के बीच में क्या क्या अंतर है, जिससे इनको विविध श्रेणियों में बांटा गया, इसका भी यथार्थ अध्ययन कर सकेंगे।

## 12.2 पुराण और महापुराण के बीच अंतर

पुराण, हिन्दुओं के धर्म सम्बन्धी आख्यान ग्रंथ हैं, जिनमें संसार ऋषियों राजाओं के वृत्तान्त आदि हैं। ये वैदिक काल के बहुत समय बाद के ग्रन्थ हैं, जो स्मृति विभाग में आते हैं। भारतीय जीवन धारा में जिन ग्रन्थों का महत्त्वपूर्ण स्थान है उनमें पुराण प्राचीन भक्ति ग्रन्थों के रूप में बहुत महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। अठारह पुराणों में अलग अलग देवी देवताओं को केन्द्र मानकर पाप और पुण्य, धर्म और अधर्म, कर्म और अकर्म की गाथाएँ कही गयी हैं। कुछ पुराणों में सृष्टि के आरम्भ से अन्त तक का विवरण दिया गया है।

पुराण का शाब्दिक अर्थ है, प्राचीन या पुराना। पुराणों की रचना मुख्यतः संस्कृत में हुई है, किन्तु कुछ पुराण क्षेत्रीय भाषाओं में भी रचे गए हैं। हिन्दू और जैन दोनों ही धर्मों के वाङ्मय में पुराण मिलते हैं।

पुराणों में वर्णित विषयों की कोई सीमा नहीं है। इसमें ब्रह्माण्डविद्या, देवी देवताओं, राजाओं, नायकों, ऋषि मुनियों की वंशावली, लोककथाएँ, तीर्थयात्रा, मन्दिर, चिकित्सा, खगोलशास्त्र, व्याकरण, खनिज विज्ञान, हास्य, प्रेमकथाओं के साथ साथ धर्मशास्त्र और दर्शन का भी वर्णन है।

पुराणों में विष्णु, वायु, मत्स्य और भागवत में ऐतिहासिक वृत्त, राजाओं की वंशावली आदि के रूप में बहुत कुछ मिलते हैं। ये वंशावलियाँ यद्यपि बहुत संक्षिप्त हैं और इनमें परस्पर कहीं–कहीं विरोध भी हैं, परंतु फिर भी ये इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। पुराणों की ओर ऐतिहासिकों ने इधर विशेष रूप से ध्यान दिया है और वे इन वंशावलियों की सत्यता पर शोध कर रहे हैं

पुराण का शाब्दिक अर्थ है – प्राचीन आख्यान या पुरानी कथा। 'पुरा' शब्द का अर्थ है – अनागत एवं अतीत। 'अण' शब्द का अर्थ होता है – कहना या बतलाना।

सांस्कृतिक अर्थ से हिन्दू संस्कृति के वे विशिष्ट धर्मग्रन्थ जिनमें सृष्टि से लेकर प्रलय तक का इतिहास वर्णन शब्दों से किया गया हो, पुराण कहे जाते है। पुराण शब्द का उल्लेख वैदिक युग के वेद सहित आदितम साहित्य में भी पाया जाता है अतः ये सबसे पुरातन (पुराण) माने जा सकते हैं। अथर्ववेद के अनुसार पुराणों का आविर्भाव ऋक्, साम, यजुस् और छन्द के साथ ही हुआ था।

शतपथ ब्राह्मण (१४.३.३.१३) में तो पुराण वाङ्मय को वेद ही कहा गया है। छान्दोग्य उपनिषद् ने भी पुराण को वेद कहा है।

अमर कोष आदि प्राचीन कोषों में पुराण के पाँच लक्षण माने हैं –

१. सर्ग – पंचमहाभूत, इन्द्रियगण, बुद्धि आदि तत्त्वों की उत्पत्ति का वर्णन।
२. प्रतिसर्ग – ब्रह्मादि स्थावरान्त संपूर्ण चराचर जगत् के निर्माण का वर्णन।
३. वंश – सूर्यचन्द्रादि वंशों का वर्णन।
४. मन्वन्तर – मनु, मनुपुत्र, देव, सप्तर्षि, इन्द्र और भगवान् के अवतारों का वर्णन।
५. वंशानुचरित – प्रति वंश के प्रसिद्ध पुरुषों का वर्णन।

सृष्टि के रचनाकर्ता ब्रह्माजी ने सर्वप्रथम जिस प्राचीनतम धर्मग्रन्थ की रचना की, उसे पुराण के नाम से जाना जाता है।

पुराण मनुष्य को धर्म एवं नीति के अनुसार जीवन व्यतीत करने की शिक्षा देते हैं। पुराण मनुष्य के कर्मों का विश्लेषण कर उन्हें दुष्कर्म करने से रोकते हैं। पुराण वस्तुतः वेदों का विस्तार हैं। वेद बहुत ही जटिल हैं। अतः वेदव्यास जी ने कहा है, **''पूर्णात् पुराण''** जिसका अर्थ है, जो वेदों का पूरक हो, वेदों की जटिल भाषा में कही गई बातों को पुराणों में सरल भाषा में समझाया गया हैं। पुराण साहित्य में अवतारवाद को प्रतिष्ठित किया गया है।

इस प्रकार पुराण मानव संस्कृति को समृद्ध करने तथा सरल बनाने में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुए हैं तथा इनका प्रचार भी वेदव्यास जी के कारण जन जन तक सरल भाषा में हो पाया है।

### 12.2.1 महापुराण

महापुराणों के लेखक का नाम व्यास (कृष्णद्वैपायन, वेदव्यास) है। वे पराशर ऋषि के पुत्र थे। उनकी माता सत्यवती थीं जिनका पालन यमुना के द्वीप में मल्लाहों के राजा दासराज के द्वारा हुआ था। वे वस्तुतः चेदिराज वसु की कन्या थीं। वेदव्यास को यमुनाद्वीप में जन्म के कारण द्वैपायन, शरीर से कृष्णवर्ण होने के कारण कृष्णमुनि तथा वैदिक मन्त्रों को याज्ञिक उपयोग के लिए चार वेदों में विभक्त करने के कारण वेदव्यास भी कहा गया है। महाभारत की कथा के अनुसार धृतराष्ट्र, पाण्डु और विदुर इन्हीं से नियोग द्वारा उत्पन्न हुए थे। व्यास ने तीन वर्षों तक निरन्तर परिश्रम से महाभारत जैसे महान् ग्रन्थ की रचना की थी।

महापुराणों के क्रम का आधार श्रीमद्भागवत को माना गया है–

**ब्राह्मं पाद्मं वैष्णवं च शैवं लैङ्गं सगारुडम्।**
**नारदीयं भागवतमाग्नेयं स्कान्दसंज्ञितम्।**

**भविष्यं ब्रह्मवैवर्तं माक्रण्डेयं सवामनम्।**
**वाराहं मात्स्यं कौमं ब्रह्माण्डाख्यमिति त्रिषट् ।। (भागवत पु. १२अ७अ२३–२४)**

(१. ब्रह्म २. पद्म ३. विष्णु ४. शिव ५. लिङ्ग ६. गरुड ७. नारद ८. भागवत ९. अग्नि १०. स्कन्द ११. भविष्य १२. ब्रह्मवैवर्त १३. मार्कण्डेय १४. वामन १५. वराह १६. मत्स्य १७. कूर्म १८. ब्रह्माण्ड)

ऊपर बताए गए पुराणों की संख्या नामक खंड में इस विषय पर चर्चा की गई है कि पुराणों की संख्या कितनी है तथा आचार्यों ने कितनी मानी है कुल मिलाकर आचार्य १८ पुराण तथा १८ उपपुराण तथा कुछ अन्य पुराणों का भी उल्लेख करते हैं। अब इन सभी पुराणों में जो पुराण आकार तथा विषय वस्तु में बृहद अर्थात महान है उनको महापुराण कहा गया है वह महापुराण कौन कौन से हैं उनको एक बार पुनः दिग्दर्शन के लिए यहां प्रस्तुत किया जा रहा है–

१. ब्रह्म पुराण

२. पद्म पुराण

३. विष्णु पुराण
४. वायु पुराण
५. भागवत पुराण
६. नारद पुराण
७. माक्रण्डेय पुराण
८. अग्नि पुराण
९. भविष्य पुराण
१०. ब्रह्मवैवर्त पुराण
११. लिंग पुराण
१२. वराह पुराण
१३. स्कन्द पुराण
१४. वामन पुराण
१५. कूर्म पुराण
१६. मत्स्य पुराण
१७. गरुड़ पुराण
१८. ब्रह्मांड पुराण

**महापुराणान्येतानि ह्यष्टादश महामुनेः।**
**तथा चोपपुराणानि मुनिभिरू कथितानि च।। विष्णु पुराण ३.६.२४**

इन्हीं १८ पुराणों को महापुराण की संज्ञा दी गई है, शब्द साम्य को देखते हुए महापुराण के विषय में कुछ चर्चा जैन संप्रदाय के आचार्यों ने भी की है, उसको भी यहीं पर स्पष्ट कर देना अनुचित नहीं होगा।

महापुराण जैन धर्म से संबंधित दो भिन्न प्रकार के काव्य ग्रंथों का नाम है, जिनमें से एक की रचना संस्कृत में हुई है तथा दूसरे की अपभ्रंश में। संस्कृत में रचित महापुराण के पूर्वार्ध (आदिपुराण) के रचयिता आचार्य जिनसेन हैं तथा उत्तरार्ध (उत्तरपुराण) के रचयिता आचार्य गुणभद्र। अपभ्रंश में रचित बृहत् ग्रंथ महापुराण के रचयिता महाकवि पुष्पदन्त हैं। इस महाग्रंथ की पुष्पिका में स्वीकृत मुख्य नाम त्रिषष्टिलक्षणमहापुराणसंग्रह है तथा अपर नाम महापुराण है। इसके आदि भाग (आदिपुराण) के रचयिता आचार्य जिनसेन तथा उत्तर भाग (उत्तरपुराण) के रचयिता आचार्य जिनसेन के शिष्य आचार्य गुणभद्र हैं।

जिनसेन स्वामी ने सभी ६३ शलाका पुरुषों का चरित्र लिखने की इच्छा से महापुराण का प्रारंभ किया था, परंतु बीच में ही शरीरान्त हो जाने से उनकी यह इच्छा पूर्ण न हो सकी और महापुराण अधूरा रह गया जिसे उनकी मृत्यु के उपरांत उनके शिष्य गुणभद्र ने पूरा किया। महापुराण के दो भाग हैं, एक आदिपुराण और दूसरा उत्तरपुराण। आदिपुराण में प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ या ऋषभदेव का चरित्र है और उत्तर पुराण में शेष २३ तीर्थंकरों तथा अन्य शलाका पुरुषों का। आदिपुराण में बारह हजार श्लोक तथा ४७ पर्व या अध्याय हैं। इनमें से ४२ पर्व पूरे तथा ४३वें पर्व के ३

श्लोक आचार्य जिनसेन के और शेष चार पर्वों के १६२० श्लोक उनके शिष्य आचार्य गुणभद्र द्वारा रचित हैं। इस तरह आदिपुराण के १०,३८० श्लोकों के रचयिता आचार्य जिनसेन हैं।

आदिपुराण जैनागम के प्रथमानुयोग ग्रंथों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। विविध विषयों का अपने ढंग से विवेचन करने के अतिरिक्त आचार्य जिनसेन ने अपने से पूर्ववर्ती सिद्धसेन, समंतभद्र, श्रीदत्त, यशोभद्र, प्रभाचंद्र, शिवकोटि आदि सोलह विद्वानों का भी उल्लेख किया है। इसके अतिरिक्त देशविभाग में सुकोशल, अवन्ती, पुण्ड्र, कुरु, काशी आदि प्रदेशों का भी विवरण आया है।

उत्तर पुराण महापुराण का पूरक भाग है। इसमें अजितनाथ से आरंभ कर २३ तीर्थंकर, सगर से आरंभ कर ११ चक्रवर्ती, ९ बलभद्र, ९ नारायण, ९ प्रतिनारायण तथा उनके काल में होने वाले विशिष्ट पुरुषों के कथानक दिये गये हैं। इन विशिष्ट कथानकों में कितने ही कथानक इतने रोचक ढंग से लिखे गये हैं कि उन्हें प्रारंभ करने पर पूरा किये बिना बीच में छोड़ने की इच्छा नहीं होती। यद्यपि आठवें, सोलहवें, बाईसवें, तेईसवें और चौबीसवें तीर्थंकर को छोड़कर अन्य तीर्थंकरों के चरित्र अत्यंत संक्षिप्त रूप से लिखे गये हैं परंतु वर्णन शैली की मधुरता के कारण वह संक्षेप भी अरूचिकर नहीं होता है। इस ग्रंथ में न केवल पौराणिक कथानक ही है किंतु कुछ ऐसे स्थल भी हैं जिनमें सिद्धांत की दृष्टि से सम्यक् दर्शन आदि का और दार्शनिक दृष्टि से सृष्टि कर्तृत्व आदि विषयों का भी अच्छा विवेचन हुआ है। अपभ्रंश भाषा में रचित महान ग्रंथ 'महापुराण' महाकवि पुष्पदंत की लेखनी से प्रसूत अमर काव्य है। वर्तमान में उपलब्ध महापुराण बृहद आकार के है। इसीलिए जैन संप्रदाय में जैनी आचार्यों ने तथा अन्य आचार्यों द्वारा लिखित आकार में बृहद ग्रंथो को महापुराण की संज्ञा दी है।

इस प्रकार पुराण और महापुराण के बारे में पढ़ने के बाद हमे कुछ तथ्य स्पष्ट हो जाते है। जैसे–

१. पुराणों का उल्लेख वैदिक काल से ही प्राप्त होने लगता है किन्तु महापुराणों का महाभारत के कर्ता कृष्ण द्वैपायन व्यास द्वारा हुआ।

२. पुराणों की संख्या अनेक हो सकती है लेकिन महापुराण १८ (अट्ठारह) ही है।

३. पुराण संक्षिप्त है तथा महापुराण बृहत है।

४. पुराण विषय वस्तु की दृष्टि से संक्षिप्त तथा महापुराण में विषयों की भरमार है।

५. विद्वानों की मान्यता है कि कुछ परवर्ती पुराण बोपदेव ने लिखे है, किन्तु महापुराण महर्षि व्यास के द्वारा ही लिखे गए है।

६. पुराणों में अनेक विषयों का संकलन प्राप्त होता है, अपितु महापुराण में कुछ चयनित विषयों का ही विस्तार से वर्णन प्राप्त होता है।

## 12.3 विविध पुराण

उपपुराणों के स्रोत महापुराण ही हैं इसमें किसी की विमति नहीं है। परन्तु महापुराणों की कथावस्तुओं को कहीं पर संक्षिप्त कर दिया गया है तो कहीं पर विस्तृत कर दिया गया है। विलक्षणता एवं चमत्कार लाने हेतु कहीं–कहीं पर कथावस्तु का परिवर्तन कर

दिया गया है। अतः उपपुराणों का रसास्वाद अन्य पुराणों की अपेक्षा भिन्न ही हैं। स्कन्दपुराण उपपुराणों की मान्यता को निम्न प्रकार से स्वीकार करता है।

**तथैवोपपुराणानि यानि चोक्तानि वेधसा। स्कन्द.पु. रेवाखण्ड १.५४**

### 12.3.1 उपपुराणों की संख्या एवं नाम

महापुराणों में उपलब्ध सूची के अनुसार सर्वत्र उप पुराणों की संख्या अठारह ही हैं, परन्तु पुराणों के नाम में पर्याप्त अन्तर लक्षित हैं।

ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार–

**अष्टादशपुराणानामेवमेवं विदुर्बुधाः।**
**एवञ्चोपपुराणानामष्टादश प्रकीर्तिताः ।।** (ब्र.वै. श्रीकृष्ण जन्मखण्ड १३१.२२)

इस बात का समर्थन स्कन्द पुराण भी करता है–

**पाराशरं भागवतं कौमञ्चाष्टादश क्रमात। (स्क.पु. रेवाखण्डे १.५८)**

पद्मपुराण के अनुसार उपपुराणों का क्रम इस प्रकार है–

**तथा चोपपुराणानि कथयिष्याम्यतः परम्।**
**आद्यं सनत्कुमाराख्यं नारसिंहमतः परम्।।**

**तृतीयं माण्डमुद्दिष्टं दौर्वाससमथैव च।**
**नारदीयमथान्यच्च कापिलं मानवं तथा।।**

**तद्वदौशनसं प्रोक्तं ब्रह्माण्डं च ततः परम्।**
**वारुणं कालिकास्वानं माहेशं साम्बमेव च।।**

**सौरं पाराशरं चौव मारीचं भार्गवायम्। पा**
**कौमारं च पुराणानि कीर्तितान्यष्ट वै दश।।**

पद्म महा.पु. पातालखण्डे ११३ध्६३–६७

(१. सनत्कुमार २. नारसिंह ३. आण्ड ४. दौर्वासस ५. नारदीय ६. कपिल ७. मानव ८. औशनस ६. ब्रह्माण्ड १०. वारुण ११. कालिका १२. माहेन १३. साम्ब १४. सौर १५. पाराशर १६. मारीच १७. भार्गव १८. कौमार)

इस प्रकार विभिन्न पुराणों में उपपुराणों की सूची मिलती है जिनमें से प्रमुख पुराण हैं– स्कन्दपुराण के प्रभासखण्ड में सूतसंहिता, सौर संहिता, देवीभागवत, गरुडपुराण, वायुपुराण, कूर्मपुराण एवं ब्रह्मवैवर्तपुराण। ऐसे अनेक उपपुराण हैं जिनके नाम मात्र विभिन्न पुराणों में सूचित हैं परन्तु वे पुराण अब तक उपलब्ध नहीं हुए हैं– सनत्कुमार, स्कान्द, दौर्वासस, नारदीय, वामन, औशनस, ब्रह्माण्ड, माहेश्वर, मानव, नन्दिकेश्वर, आखेटक, नान्द, प्रभासक, लीलावती, एकपाद, शौकेय, बार्हस्पत्य, भागवत, कौर्म, काली, आण्ड, माहेश, कौमार, आदित्य, शौक्र, वायवीय, भास्कर, पाद्म, वृहन्नन्दीश्वर, गरुड, बृहन्नारसिंह, बृहद्वैष्णव, लघुभागवत, मृत्युञ्जय आङ्गिरस, अम्बिका, शिवरहस्य, सूर्य, भगवती भागवत, हंस, वृहदौशनस एवं बृहद् रुद्र।

इसी प्रकार नब्बे से अधिक उपपुराणों के नाम मिलते हैं। डॉ. विल्सन ने– विष्णु पुराण की भूमिका में उपपुराण की संख्या को शताधिक माना है। कुछ विद्वानों ने उप पुराणों को पाँच वर्गों में विभाजित किया है –

१. वैष्णव

२. शैव

३. शाक्त

४. सौर

५. गाणपत्य

### 12.3.2 औपपुराण

महापुराण एवं उपपुराण के साथ साथ या अनन्तर, पुराण लिखने का क्रम निरन्तर चलता रहा, जिसके फलस्वरूप औपपुराण भी पुराणवाङ्मय के साहित्य को समृद्ध करते रहें। बृहद्विवेक में औपपुराण की सूची कुछ इस प्रकार दी गई है–

**आद्यं सनत्कुमारं च नारदीयं बृहच्च यत्।**
**आदित्यं मानवं प्रोक्तं नन्दिकेश्वरमेव च।।**

**कौम भागवतं ज्ञेयं वाशिष्ठं भार्गवं तथा।**
**मुद्गलं कल्किदेव्यौ च महाभागवतं ततः।।**

**बृहद्धर्मं परानन्दं वह्निं पशुपतिं तथा।**
**हरिवंशं ततो ज्ञेयमिदमौपपुराणकम् ।।** (बृहद् विवेक ३)

(१. आदि २. सनत्कुमार ३. बृहन्नारदीय ४. आदित्य ५. नन्दिकेश्वर ६. कौर्म ७. भागवत ८. वाशिष्ठ ६. भार्गव १० मुद्गल ११. कल्कि १२. देवी १३. महाभागवत १४. बृहद्धर्म १५. परानन्द १६. वह्नि १७. पशुपति १८. हरिवंश)

इनमें बहुत से औपपुराण उपपुराण की कोटि में स्वीकृत हैं, जो पहले वर्णित हैं। इन औपपुराणों में से जो लेख इस पुस्तक में प्रकाशित हैं उनके उल्लेख न करते हुए अन्य अवशिष्ट औपपुराणों के सामान्य परिचय प्रदत्त हैं।

#### वन्ही औपपुराण

यद्यपि इसका हस्तलेख कहीं भी उपलब्ध नहीं है, तथापि आचार्य बलदेव उपाध्याय ने अपने पुराण विमर्श ग्रन्थ में लिखा है कि उक्त पुराण की पाण्डुलिपि डॉ. हाजरा जी के पास विद्यमान है। कुछ विद्वान् इसे प्राचीन अग्नि पुराण मानते हैं। हेमाद्रि ने चतुर्वर्ग चिन्तामणि में इस पुराण से अनेक पद्यों को अपने ग्रन्थ में उद्धृत किया है। इसके वर्ण्य विषय हैं–पाशुपत व्रत, वापी एवं कूपों के प्रतिष्ठाकाल निर्णय, ब्राह्मण लक्षण, जन्माष्टमी विधि निर्णय, विभिन्न दानों के फल निरूपण एवं वेद वेदाङ्ग के पाठ का फल।

संस्कृत का एक प्रसिद्ध श्लोक कुछ विकृत रूप में उक्त पुराण में उपलब्ध है–

**नाप्यहं कामये राज्यं न स्वर्ग ना पुनर्भवम्।**
**प्राणिनां दुःखतप्तानां कामये दुःखनाशनम् ।।**

चतुर्वर्ग चिन्तामणि के दानखण्ड से उद्धृत हेमाद्रि ने अग्नि पुराण एवं वन्ही पुराण से पृथक पृथक् श्लोकों का उद्धरण किया है। अतः वे दोनों पुराण पृथक पृथक् हैं। दशम शताब्दी से पहले ही इसकी रचना हो गई होगी।

**हरिवंशपुराण औपपुराण**

यह महाभारत का खिलभाग है। इसमें तीन पर्व हैं– हरिवंश पर्व, विष्णु पर्व, भविष्य पर्व। प्रत्येक पर्व की विषयवस्तु इस प्रकार वर्णित है–

**हरिवंशस्ततः पर्व पुराणं खिल संज्ञितम्।**
**विष्णुपर्व शिशोश्चर्या विष्णोः कंसवधस्तथा।।**

**भविष्यं पर्व चाप्युक्तं खिलेष्वेवाद्भुतं महत्।।**
**एतत्पर्वशतं पूर्ण व्यासेनोक्तं महात्मना।।**

इसकी कथा जनमेजय एवं वैशम्पायन के संवाद से प्रारम्भ होती है। सूत, शौनक एवं व्यास के संवादों से आगे विस्तार होता है। हरिवंश पर्व के प्रमुख विषय हैं– दक्षोत्पत्ति, पृथुचरित, मरुतों की उत्पत्ति, ऐल उपाख्यान, धुन्धुवध, त्रिशंकु वर्णन, श्राद्ध वर्णन, हंस वर्णन, सोमचरित, देवासुर संग्राम, उर्वशी पुरुरवा उपाख्यान एवं विष्णु के विभिन्न अवतार आदि।

विष्णु पर्व में कृष्ण की बाललीला मुख्य रूप में वर्णित है जिसके अन्तर्गत शकट भंजन, यमलार्जुन प्रसंग, कुब्जा के प्रति अनुग्रह एवं कंसवध आदि वर्णित हैं। कृष्ण के परवर्ती चरित भी इस पर्व में वर्णित हैं।

### 12.3.3 अन्य औपपुराण

१. कल्कि पुराण
२. महाभागवत पुराण
३. परानन्द पुराण
४. बृहद्धर्म पुराण
५. बृहन्नारदीय पुराण
६. मुद्गल पुराण

## 12.4 अन्य प्रमुख पुराण

अन्य प्रमुख पुराणों में सर्वप्रथम नाम आता है आत्म पुराण का। आत्म पुराण में भी सृष्टि, प्रलय, वंश, मन्वंतर इन सभी लक्षणों का न्यून अधिक रूप में समावेश है, वृत्र आख्यान, नचिकेत उपाख्यान जैसे अनेक आख्यान उपाख्यान भी वर्णित है अतः इसे पुराण की श्रेणी में रखा जा सकता है। आत्म पुराण के रचना काल के विषय में कोई विवाद नहीं है। यह तेरहवीं शताब्दी में लिखा गया है इसके रचयिता परमहंस परिव्राजक आचार्य आनंद आत्म पूज्य पाद के शिष्य भगवान शंकर आनंद है जैसा कि इसकी पुष्पिका से ही स्पष्ट हो जाता है– **इति श्रीमत् परमहंसपरिव्राजकाचार्य आनन्दात्मपूज्यपादशिष्येण श्रीशंकरानन्दभगवता विरचित उपनिषद्रत्न आत्मपुराण नाम ... अध्याय** से स्पष्ट है।

### नीलमत पुराण

डॉ. भंडारकर ने इसकी एक पांडुलिपि के आधार पर इसे स्वतंत्र पुराण ना स्वीकार कर माहात्म्य माना है अथवा किसी पुराण विशेष का अंत माना है क्योंकि इसमें पुराण के समस्त लक्षण घटित नहीं होते हैं। नील मत पुराण भी पौराणिक शैली में ही लिखा गया है, जिसमें एक व्यक्ति की जिज्ञासा युक्त प्रश्नों का उत्तर दूसरा व्यक्ति पूर्व संवाद के माध्यम से देता है।

नीलमत पुराण स्वयं अपने में कुछ महत्व रखता है जैसे कपिलेश्वर माहात्म्य, आश्रम स्वामी माहात्म्य आदि। महत्वपूर्ण बात यह है कि कल्हण स्वयं इसे पुराण कहकर पुकारते हैं।

### दत्तपुराण

जिस प्रकार कालांतर में महाकवि भास के नाटकों का एकाएक उजागर होकर दुनिया के सामने आना हुआ, उसी प्रकार दत्त पुराण का भी पुरातन पड़ी हुई पांडुलिपियों से नाम उजागर हुआ। पुराण में धर्म की रक्षा एवं दुष्ट संहार के अतिरिक्त लोक शिक्षण भी अवतार लेने का प्रयोजन है, जिससे जगत का कल्याण होता है।

पुराण का विभाजन अष्टक नाम से किया गया है। इसमें कुल ८ अष्टक है एवं प्रत्येक अष्टक में ८–८ अध्याय हैं, जिनमें विविध विषयों पर विचार विमर्श किया गया है।

## 12.5 सारांश

प्रस्तुत इकाई में पुराण तथा महापुराण के मध्य अंतर को पढा। जिससे ज्ञात होता है कि पुराण के ही किसी एक दो अंश का विस्तार से कहने पर महापुराण संज्ञा सिद्ध होती है। इसका परिणाम है कि महर्षि व्यास द्वारा पुराणों को महापुराण स्वरूप प्रदान किया गया महापुराण १८ हैं। इसके साथ ही विविध पुराणों का अध्ययन भी किया गया है, जिसके अन्तर्गत उपपुराण और उनकी संख्या, औपपुराण भी स्थापित किये गये हैं। इससे पृथक् अवशिष्ट पुराणों से सम्बन्धित कुछ अन्य पुराणों की भी चर्चा की है। पुराण हिंदू संस्कृति के वह सभ्यतम एवं प्राचीन ग्रंथ है जिनमें सृष्टि से लेकर प्रलय तक की समस्त घटनाएं कथा एवं आख्यानों के माध्यम से विशेष ज्ञान का स्रोत बना कर जन जन तक पहुंचाई गई है। पुराणों में वर्णित विषयों की कोई सीमा नहीं है, इनमें ब्रह्मांड विद्या, देवी देवताओं, राजाओं, ऋषि मुनियों की वंशावली, लोक कथाएं, तीर्थ यात्रा, चिकित्सा, खगोल शास्त्र, विज्ञान आदि अनेक विषयों पर विशद चर्चा एवं ज्ञान उपलब्ध होता है।

## 12.6 अभ्यास

१. पुराण शब्द से आप क्या समझते हैं ?

२. महापुराण से क्या अभिप्राय है ?

३. पुराण तथा महापुराण में क्या अंतर है?

४. औपपुराणों की संख्या कितनी है ?

५. उपपुराणों को कितने वर्गों में विभाजित किया।